५३: राज्यनीति का आधार-२

दिनांक -२३-०१-२०१२

परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था ही राज्यनीति का आधार है | राज्य का मतलब वैभवित रहना, प्रमाणित रहना है | प्रत्येक परिवार में वैभव प्रमाणित रहना, वैभव का मतलब है आचरण | आचरण अनुभवमूलक, विचारमूलक, व्यवहारमूलक होना पाया जाता है | अनुभवमूलक प्रमाण समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूप में देखा गया है | अनुभव सह-अस्तित्व में ही होता है | सह-अस्तित्व में चारों अवस्थाएं संतुलित रहना ही अनुभव का प्रयोजन है अथवा अनुभवमूलक सूत्र है | इस क्रम में मानव समझदार होना अति आवश्यक है अर्थात हर नर-नारी समझदार होना एक आवश्यकता है | समझदारी का स्वरूप विकसित चेतना ही है | विकसित चेतना का स्वरूप मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना ही है | चेतना विकास ही विकसित चेतना है | चेतना विकास चैतन्य प्रकृति रूपी जीवन में ही होता है | यह जीवन में साक्षात्कार, बोध, अनुभव ही है | मानव चैतन्य प्रकृति में गण्य है | जीव संसार भी चैतन्य प्रकृति में गण्य है | इसी क्रम में मानव जीव चेतना में जीते हुए जीवों से अच्छा जीने का प्रयत्न किया जिसमें सफल हुआ | यह सकारात्मक भाग है | इसी के साथ नकारात्मक भाग लाभोन्मादी, कामोन्मादी, भोगोन्मादी शिक्षा स्वरूप के साथ सुविधा, संग्रह के साथ अथवा सुविधा, संग्रह के अर्थ में विवश हो चुका है | सम्पूर्ण मानव अथवा सर्वाधिक मानव सुविधा, संग्रह के चक्कर में फंस चुका है | यदि यहाँ तक भी सकारात्मक माना जाय तब इसी बीच धरती बीमार हो गयी | धरती बीमार होने के कारण के मूल में मानव ही है | मानव जात का किया हुआ करतूत से धरती बीमार हो गई है, प्रदूषण छा गयी है | सम्पूर्ण मानव सुविधा, संग्रह जैसी अपराधिक क्रियाओं में फंस चुका है |

इन सब बातों को देखने पर पता चलता है कि मानव ही धरती को बीमार करने वाला एकमात्र इकाई है | इसी में अर्थात मानव इकाई में ही ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में पहचान बनाये रखना मानव प्रकृति में देखने को मिलता है | इन तीनों प्रकार के मानवों का उद्देश्य केवल सुविधा, संग्रह ही है | कर्तव्य, दायित्व, मूल्य, मूल्यांकन, निश्चयन, समाधान जैसी बिन्दुएँ नगण्य हो चुकी हैं अथवा आय ही नहीं हैं | रूढियों में भी नहीं हैं | रूढियों के रूप में जो आदर्शवाद है वह रहस्य होने के फलस्वरूप ओझिल हो चुकी है | फिर भी मानव कामना शुभ के अर्थ में होने के कारण अपना ध्यान बंटाए रहता है | इस क्रम में अर्थात आदर्शवादी क्रम में ज्यादा से ज्यादा आदमी “सुनना सबकी, करना अपने मन की ” के स्वरूप में ढल चुका है | आदर्शवाद त्याग, तपस्यापूर्वक भक्ति, विरक्ति का प्रबोधक है | मनुष्य के सम्बंध को त्यागना, असली माता- पिता को पकड़ना अर्थात ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या के आधार पर सत्य को पकड़ना | सत्य को पकड़ना बना नहीं, जीने में आया नहीं, समझ में आया नहीं | इस प्रकार मानव फटीचर हो चुका है अर्थात एक निश्चयात्मक परम्परा बन नहीं पाया | जो कुछ भी परम्परा बना है वह धर्म और राज्य के आधार पर व्यक्तिवादी एवं समुदायवादी ही है | यही मुख्य बात है |

इस प्रकार मानव संकटग्रस्त हो चुका है; क्योंकि धरती बीमार हो चुकी है | धरती बीमार होने के पश्चात अगली पीढी कहाँ रहेगी? वैज्ञानिकों का सोचना है मंगल ग्रह, चन्द्र ग्रह या किसी अन्य ग्रह पर जाएँगे | आकाश में घर बनाएंगे | इन सब बातों का मतलब है अतिवाद | अतिवाद कहते बनता है, होता नहीं | सब को कैसा ले जायेंगे, रखेंगे कहाँ, क्या खिलाएंगे, पिलायेंगे? धीरे धीरे चंद्रमा में जाने का मोह भंग होता जा रहा है | अब मंगल को पकड़े हैं | अगली बार किसी और को, ऐसा सुनते ही रहना है | कहीं भी रहें भोजन चाहिए ही | शरीर को भोजन आवश्यक है | शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में मानव

का पहचान है | इन सभी बातों का अध्ययन से पता चलता है कि हम अभी अनिश्चयता, अस्थिरता की ओर ही जा रहे हैं | अनिश्चयता, अस्थिरता किसी को स्वीकृत नहीं है | इस फंसावट से मुक्ति के लिये विकल्प की आवश्यकता है | विकल्प का मतलब विकसित चेतना ही है | विकसित चेतना का मतलब मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना ही है | तीनों चेतनाओं को उन उन के दृष्टि-विषय-स्वभाव के आधार पर स्पष्ट कर चुके हैं | यह जीवन जागृति सहज महिमा है | इस सब का भली प्रकार अध्ययन करने पर पता चलता है कि मानव अभी तक अस्थिरता, अनिश्चयता की ओर ही दौड़ा है | जबकि मानव चेतना में ही स्थिरता, निश्चयता पाया जाता है | यह अध्ययन अर्थात श्रवण मनन निदिध्यासन विधि से मानवीयतापूर्ण जीवन के अनन्तर न्याय धर्म सत्य में चित्त वृत्ति का संयंत होना ही अवधारणा है | इसे जीकर देखा है | मानवीयतापूर्ण जीवन में आदमी जीता है, तब न्याय संगत ही होता है | दूसरा कुछ होता नहीं | यही अपराध मुक्त आदमी का लक्षण है | इसके बाद आता है देव चेतना का ज्ञान, उसके बाद आता है दिव्य चेतना का ज्ञान | देव एवं दिव्य मानव निर्भ्रांत चेतना में जीता है |

मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में ही क्रमश: समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित होता है | सह-अस्तित्व का प्रमाण अनुभवमूलक विधि से होता है | अनुभव, विचारमूलक व्यवहार के अनुसार नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता है | इसे भली प्रकार जीकर देखा गया है | यह भाग सूत्र रूप में प्रकाशित हो पाया है | विचार प्रमाण के अनुसार जीने के लिये सर्वाधिक मानव समझदार होना आवश्यक है | अभी तक यह प्रतीक्षित है | विकल्प विधि से जितने भी आदमी प्रवृत्त हैं, सबका विश्वास है, आज नहीं तो कल विकल्प को समझना ही पड़ेगा | यदि समझ पाते हैं तो मानव परम्परा में परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था प्रमाणित हो जाएगी | इस प्रकार परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था के मूल में एक परिवार के सर्वाधिक मानव अथवा सर्वाधिक लोग समझदार होना आवश्यक है, प्रमाणित होना आवश्यक है |

समझदारी के साथ समाधान होना पाया गया है | समाधान, समृद्धि के बाद अथवा साथ ही मानव में अनुभव प्रमाण होना पाया जाता है | समझदारी एवं अनुभव के अलावा यदि कोई स्थिति है तो मानव पढ सकता है, बोल सकता है, प्रेरक हो सकता है या हो पाता है प्रमाणित नहीं | इसे भली प्रकार देखा गया है | ऐसे समझदार परिवार में समाधान, समृद्धि अवश्यम्भावी है | समझदारी ही समाधान, समाधान ही सुख है | बोध का ही दूसरा नाम समाधान है | इस प्रकार हर परिवार सुखी, समृद्ध होना पाया जाता है | यह काले, भूरे, लाल रंग के आधार पर नहीं है | इस प्रकार सुख, समाधान के साथ तथा समाधान समझदारी के साथ तथा समाधान के साथ ही समृद्धि का अनुभव होता है | समाधान हो समृद्धि न हो ऐसा होता नहीं | यह सुविधा, संग्रह की ओर ही जाता है | इसलिए सब को तृप्ति पाने की आवश्यकता है ही | यह समझदारी के साथ बनता है | ऐसे समझदार पारिवार के साथ ही शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, स्वास्थ्य-संयम सूत्र रूप में प्रमाणित होता है | ऐसे परिवार में से ही एक व्यक्ति को व्यवस्था में भागीदारी के लिये, कुछ समय के लिये अथवा ज्यादा समय के लिये निर्वाचित करना सुलभ है | यही मुख्य मुद्दा है | यह परिवार में सफल होने के बाद ही स्वराज्य व्यवस्था आगे सभाओं में होना सफल होता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)